फिर यहीं आयेंगे वे...

डॉ. राजकुमारी
मो. 8708165299

अचानक से कमरे के दरवाजे पर जोर-जोर से हाथों की थपथपाहट से उत्पन्न ध ड़धड़ाहट की ध्वनि ने मेरे अध्ययन की एकाग्रचित्तता को खंडित कर दिया। मेरा माथा ठनका, ऐसा लग रहा था जैसे वे आवाजें किसी अनहोनी के हो जाने का अंदेशा दे रही हों। मैं फटाफट अपनी गोद में रखी किताब जिसका शीर्षक 'जाति का समूल विनाश' था, को साइड में रख, फुर्ती से तकिए को बिस्तर पर पटकते हुए दरवाजे की ओर नंगे पांव दौड़ पड़ी। मैंने जैसे ही कमरे का दरवाजा खोला, माँ तूफान से भी तेज रफ्तार से कमरे में घुस गई और बिना कुछ बोले ही मेरी किताबों को उलटने-पलटने लगी। तकिए को उठाकर एक तरफ फेंक दिया, बेड पर पड़े कॉलेज बैग को पलंग पर उल्टा दिया और उसके अंदर के पेन, लिप्लोज, कंघी, डायरी सभी को आला डिजाइन के बूटेदार पलंग पोश पर बिखेरकर हड़बड़ाहट में झाड़ने लगी। मैं असमंजस की स्थिति में थी कि वो ऐसा क्यों कर रही हैं? मैंने इस घबराहट का कारण जानने का प्रयास किया जो अभी-अभी मेरे कमरे में प्रवेश कर चुकी थी। 'माँ! क्या हुआ?' मैंने पूछा लेकिन उन्होंने अनसुना कर दिया और पहले की भांति छानबीन में लगी रही।

'आप ऐसा क्यों कर रही हो?' मैंने अपने स्वर को और बढ़ाने का प्रयास किया लेकिन वे अब भी किसी अनमोल चीज को खोजने का प्रयास कर रही हो। जवाब नहीं दिया। उनकी नजरें इधर-उधर ऐसे देखे ही जा रही थीं।

'कोई चीज गुम हो गई क्या? आप बताओ मैं ढूंढती हूँ। मैंने माँ के पास जाकर जोर देकर बोला। वह बेचैन हो गुमसुम-सी कमरे में रखी वस्तुओं को लगातर बिखेरती ही जा रही थीं। टेबल पर बिछे छह प्लास्टिक के फूलदार टेबलपोश को उचकाकर देखने के बाद वे बुक सेल्फ की ओर बढ़ी और किताबों को हटा-हटाकर स्पेस में कुछ खोजने लगीं। मैं उनके पीछे-पीछे अपने सवालों को दोहराते हुए इधर-उधर चक्कर लगा रही थी। मेरे कमरे की इस तरह से तलाशी लेना मुझे नागवार गुजर रहा था और मेरे सब्र का बांध भी टूट चुका था।

'माँ अब बता भी दीजिए न! ऐसे ही आप रूम को अस्त-व्यस्त करती

रहेंगी क्या? कितनी बार पूछ चुकी हूँ?' अब मैं क्रोधित अवस्था में आ चुकी थी कि तभी माँ मेरी दिशा में तेजी से मुड़ी और मेरी पोशाक पर अपने हाथों से कुछ टटोलने की असफल कोशिश में लग गई। मैंने गुस्से में आग बबूला होकर उनके हाथों को झटक दिया और उन पर बरस पड़ी, 'माँ! आपको हुआ क्या है? मैं पागल हूँ क्या? जो इतनी देर से पूछे जा रही हूँ? इस बिहेवियर, इस छानबीन का क्या मतलब है?' मैंने रुआंसे-लड़खड़ाते शब्दों में कहा। मेरी आँखें सजल हो आई।

उन्होंने मेरी तरफ कातर निगाहों से देखा और अपनी मौनावस्था में मेरे हाथ को पकड़ कर अपने सिर पर रखते हुए बोल पड़ी, 'तुझे मेरी कसम है सच बताना! तेरे पास कोई फोन तो नहीं न?'

'नहीं तो।' मैंने सपाट लहजे में जवाब दिया।

'तेरा किसी लड़के के साथ कोई चक्कर तो नहीं चल रहा न?' माँ ने तीर से भी तेज गति में एक और सवाल छोड़ दिया।

'नहीं! पर माँ आप ऐसी अजीबोगरीब सी बातें क्यों कर रही हैं? कुछ बताएंगी या ऐसे ही पहेलियां बुझाती रहेंगी?' मैंने फिर उत्सुकता से पूछा।

माँ ने गहरी सांस छोड़ते हुए गर्दन तान ली और कुछ देर की खामोशी के बाद बोली, 'तू अब रोज शहर पढ़ने नहीं जायेगी। मैं कहीं नहीं भेजने वाली अब। अगर आगे पढ़ना है तो आराम से घर में बैठकर पढ़, नहीं तो चूल्हा-चौका सीख और अपने घर जाने की तैयारी कर ले। जितना पढ़ना था, पढ़ लिया।' वो लगातार बोलते हुए बिस्तर पर बिखरी पुस्तकों को एक-एक करके बंद करने लगी और बाकी सामान को समेटते हुए लट्टू की भांति घूमने लगी। सवाल अब भी वहीं के वहीं खड़ा था कि आखिर हुआ क्या था?

'हुआ क्या है? अब बताएंगी भी या नहीं?' मैंने थोड़े ऊंचे स्वर में झुंझलाते हुए पूछा तो उन्होंने रुक कर मेरी ओर घूरकर ऐसे देखा जैसे मुझे कच्चा चबा जायेंगी। भौंहों को तानकर अंगुली मेरी तरफ कर धमकियाना लहजे में बोली, 'बस्स, कह दिया ना अब चाहे दुनियां इधर से उधर हो जाए, तुम शहर नहीं जाओगी, मतलब, नहीं जाओगी, समझी?'

मैं इस बात को सुनकर हैरान थी। मन ही मन सोच रही थी कि अचानक उन्हें हो क्या गया? जो माँ आज तक शीरे में भिगो-भिगो बातें करती थीं आज जहर उगल रही थीं। इन सब फिजूल की बातों को कहने का मकसद क्या हो सकता था? मैं तो इस फरमान को सुन आवाक रह गई। माँ के शब्दों में चिन्ता और भय दोनों ही समाहित थे। मसला कुछ समझ नहीं आ रहा था। अब हद हो चुकी थी।

'ठीक है मत बताओ, पर मैं तो हर रोज कॉलेज जाऊंगी।' मैंने बात जानने के लिए नया पैंतरा अपनाते हुए घी को निकालने के लिए अंगुली टेढ़ी कर ली थीं। इस बार तीर निशाने पर था। माँ दो सैकेंड चुप रही फिर एकाएक आग बबूला होकर बड़ी-बड़ी आँखों से घूरकर देखते हुए बोली, 'वो अपनी बिरादरी के सतीश जी है ना जो क्लर्क हैं, उनकी लड़की ने अपने ही कस्बे के भंगियों के छोरे से ब्याह कर लिया। सुना है दोनों एक साथ ही दिल्ली शहर में पढ़ते थे। भगवान ऐसी औलाद किसी दुश्मन को भी ना दे। सारे जहान में वही चुहडे का लड़का मिला था उसे? माँ-बाप कहाँ जाकर डूबे? लड़का भी अपने से नीच जात का।' उन्होंने अपने माथे पर हाथ मारते हुए कहा।

'तो क्या हो गया माँ? है तो लड़का ही।' मैंने मासूमियत से जवाब दिया।

'ओह! तो इसलिए आप चोरों की भांति मुझे टटोलकर देख रही थी? मैंने तो कुछ किया भी नहीं।' मैंने मुँह की आकृति बिगाड़कर कंधे उचकाकर अफसोस जताते हुए सिर हिला दिया और गहरी सांस छोड़ दी।

माँ समान समेटते हुए पीठ घुमाएं हुए ही फिर से बोलने लगी, 'शहर की हवा ही खतरनाक है, सीधी-साधी दिखने वाली लड़कियां भी चालाकी, चालबाजी और झूठ बोलना सीख जाती हैं। उन्हें लगता है कि कौन-सा घर वालें उन्हें देख रहे हैं। करो मनमानी खूब धूल झोंको घरवालों की आंखों में।' वो अपने आप ही बड़बड़ाती हुई समान समेटती रही।

'प्रेरणा!' एकाएक पापा की आवाज ने हम दोनों का ध्यान बाहर की तरफ खींच लिया।

'जी! यहीं है प्रेरणा, अपने कमरे में।'

मैं कुछ बोलती उससे पहले ही माँ ने दरवाजे की ओर देखते हुए अंदर से ही सुकून भरा जवाब दे दिया।

बाहर से मर्दाना बुदबुदाहट की आवाजें और पैरों की आहटें धीरे-धीरे कानों के नजदीक आने लगी। मैंने गरदन घुमाई तो देखा पापा और भाई मेरे कमरे में प्रवेश कर रहे थे। हम दोनों सहमे से उनकी ओर देखने लगे। पापा के चेहरे पर गंभीरता पसरी पड़ी

थी और आँखें क्रोध से जल रही थीं। उन्होंने एक दृष्टि मुझ पर डाली और अपने रोबीले अंदाज में बोल पड़े, 'क्यों सारा घर सिर पर उठा रखा है? कुछ लिहाज शर्म है या नहीं? औरतों की आवाजें घर के दरवाजे के बाहर तक सुनाई देना घर की बर्बादी की ओर संकेत होता है। समझी तुम दोनों?'

मम्मी-पापा के इस बर्ताव पर मुझे बेहद गुस्सा आ रहा था। ये तो वही बात हुई कि 'करे कोई, भरे कोई'। मेरा भाई जो मेरी पढ़ाई और आजादी का सबसे बड़ा शत्रु था, भी उनके पास सीना ताने गुस्से में खड़ा मुझे घूर रहा था और तनकर तो ऐसे खड़ा था जैसे वो किसी विजेता सेना का सेनापति था। हम दोनों को तो जैसे सांप सूंघ गया। हम गर्दन झुकाए अपराधी से खड़े थे।

'पापा इन्हें भी साथ लेकर चलते हैं, ताकि ये भी देख लें कि ऐसे कुकर्मों पर बिरादरी वाले कैसे जीना मुहाल कर देते हैं।' उसने मेरी ओर घूर कर कहा। पापा ने भी उसकी बात को तवज्जो दी और हमें भी साथ आने का आदेश दे दिया।

माँ ने मेरी बाजू कसकर पकड़ ली और दाँत भींचकर बोली, 'चल तुझे दिखाती हूँ, गलत कदम उठाने का नतीजा क्या होता है।'

'पर! आ... ह! मुझे क्यों दिखाना है? आह! माँ दर्द हो रहा है छोड़ो।' मैंने कराहते हुए कहा।

'ताकि तू भी ऐसा कदम उठाने से पहले सौ बार सोचे।'

मुझे आज पहली बार अपने ही घर में अपने लोगों के सामने बेइज्जत होना पड़ रहा था और वो भी उस अपराध की आशंका के चलते जिसके होने की कोई संभावना तक नहीं थी। माँ मुझे अपराधी की भांति घसीटती हुई अपने साथ ले जा रही थी।।

जैसे ही हम सब घर से बाहर निकले तो महसूस हुआ कि कस्बाई सभी लोग अफरा-तफरी में एक ही दिशा में बेहताश दौड़े जा रहे थे। हम भी उसी हुजूम का हिस्सा बनकर उस तयशुदा राह की मंजिल पर पहुँच ही गए जहाँ एक इमारत पर मोटे-मोटे अक्षरों में भीमराव आंबेडकर भवन लिखा था। मेन गेट में घुसते ही सामने गौतम बुद्ध एवम् डॉ.भीमराव आंबेडकर की दो प्रतिमाएँ स्थापित थीं। सभी उनके सामने नतमस्तक होकर भवन के भीतर बौखलाहट में प्रवेश कर रहे थे। कुछ ने एक-दूसरे को जयभीम कह कर अभिनंदन किया तो कुछ की आँखें कमजोर लोगों के अधिकारों की आवाज बुलंद करने वालें चुहड़े-चमारों के नेताओं के इंतजार में ठहरी हुई थीं। दोनों खेमों के लोगों का जमावड़ा आमने-सामने बैठा अपने-अपने हितैषी नेताओं की राह तक रहा था। वहाँ एक लकड़ी से बने तख्त था कुछ कुर्सियां खाली पड़ी थीं जो समाज के नेताओं के लिए आरक्षित थीं और बाकी सब लोग फर्श पर बिछी लाल नीले सूत के बने धागों की दरियों पर उकडूं तो कुछ कुल्हे टिकाए बैठे थे। जिनमें महिलाएँ और पुरुषों के भी अलग-अलग समूह थे। मैं भी माँ के पास अपने मोहल्ले की औरतों के साथ जा बैठी। तभी खलबली-सी मची और अनेकों आवाजें एक साथ आई, 'नेता जी आ गए, नेता जी आ गए।'

कुछ सामाजिक कार्यकर्ताओं और अवसरवादी नेताओं का जमावड़ा तो पहले ही लग चुका था। नेता जी के आसनग्रहण करते ही लोग उनकी ओर हसरत भरी दृष्टि से अपलक देखने लगे। सभी के हृदय में आज के निर्णय को लेकर उत्सुकता बढ़ती जा रही थी। नेता जी अपनी जगह से उठे और 'जय भीम, जय फूले, जय कांशीराम।' के उदघोष के साथ हाथ जोड़ते हुए अपनी बात प्रारंभ की, 'जैसा कि आप सभी जानते हैं इस पंचायत को क्यों बुलाया गया है। दोनों बच्चे जो गैर-बिरादरी से हैं, नासमझी में घर से भागकर शादी कर ली है और दोनों ही परिवार इस शादी के खिलाफ हैं। जैसा कि आप जानते हैं कि ये दोनों बच्चे एक ही कस्बे के हैं और अलग-अलग जात से हैं। तो इस रिश्ते की डोर का कोई वजूद नहीं है। इसलिए आज हम दोनों पक्षों की बातें सुनकर सर्व सम्मति से फैसला लेगें जिसे सबको मानना पड़ेगा। यही पंचायत का अंतिम फैसला होगा। पहले लड़की पक्ष अपनी बात रखे।' नेता जी ने हाथ का इशारा कर अपने सफेद कड़क कुर्ते की झोली के पिछले हिस्से को उठाकर बैठते हुए पंचायती कार्यवाही शुरू की।

पंचायत की पैरवी शुरू हुई तो दोनों पक्षों के लोगों को अपनी-अपनी बात रखने का अवसर दिया गया।

लड़के का पिता सतीश राठी जो एक पढ़ा-लिखा आदमी व सरकारी महकमे में बाबू था, हाथ जोड़कर आँखें जमीन में झुकाए शर्मिंदगी महसूस कर रहा था और पूरे समाज के सामने अपने आप को गुनाहगार समझ रहा था।

'मैं बहुत शर्मिंदा हूँ। मुझे उसे शहर नहीं भेजना चाहिए था, आज समाज में जो मेरी पगड़ी उछली है उसका जिम्मेदार मैं ही हूँ। मैंने ही उसे आजादी दी। आप बिरादरी भाई जो फैसला करेंगे, मुझे मंजूर होगा।' वो शर्मिंदगी से अपनी

बात रखकर जमीन पर बैठ गया और फफक पड़ा।

लड़की की माँ को देखकर वहां बैठी चमारों की औरतों ने तंज कसना शुरू कर दिया।

'हमें तो पहले ही मालूम था यही होगा।' एक महिला ने दूसरी से कहा।

'हाँ! भला लड़कियों को शहर भेजने और इतनी आजादी देने की क्या जरूरत थी।'

'बड़े आधुनिक बनने की होड़ लगी थी कि फलां की लड़की गई है, हमारी क्यों नहीं जा सकती?' तीसरी ने भी अपनी भड़ास निकाली।

'अरे मुझे तो पहले ही पता था ये भागेगी, इनकी नाक तो कटी सो कटी जात-बिरादरी पर कीचड़ उछल रहा वो अलग से।' एक काली मोटी औरत दबी-सी आवाज में कानाफूसी कर मुँह बिचकाते हुए कह रही थी।

'हाँ! लड़कियों को इतनी छूट देना, छोटे-छोटे कपड़े पहनने पर न टोकना कौन-सी अच्छी बात थी?'

'खानदान की नाक कटवा दी इनकी लड़की ने। डूब क्यों नहीं मरी कहीं।'

'हाँ बहन जब छुट्टियों में आती थी पूरा-पूरा दिन टाइट जीन्स पहन के, कानों में लीड ठूंसकर कभी गली में तो कभी छत पर। हँस-हँस नैन मटक्का करते हुए कुल्हे मटकाती फिरती थी।' पीछे की ओर से फिर एक दबी आवाज सुनाई पड़ी। जिस दिशा से भी आवाजें आती मैं उसी दिशा की ओर अपनी गर्दन घूमा लेती और गौर से सुनने लगती।

'पूरी चमार बिरादरी ही नहीं बल्कि भंगी मोहल्ले वाले भी थू-थू कर रहे हैं। अरे भेजा तो इसलिए था पढ़-लिख लेगी। कोई अच्छा रिश्ता मिल जाएगा, पर उसने तो चुहड़ों के काले-कलूटे लड़के में जाने क्या देखा। कर दिया खानदान का बेड़ागर्क।' एक महोतरमा तो यूँ छाती पीट रही थीं मानो उसका तो सुहाग ही उजड़ गया हो।

जहाँ से भी मुझे ये उल-जुलूल बातें सुन रही थी मेरी गर्दन भी उसी ओर घूम रही थी। ये सब बातें सुन-सुनकर मेरा सिर चकरा रहा था। नेताजी ने रामकुमार भंगी को अपनी सफाई में बात रखने का अवसर प्रदान किया जो बदकिस्मती से लड़के का पिता था और दलित एकता मंच का सक्रिय कार्यकर्ता भी था। रामकुमार ने मुँह पर हाथ लगाकर अपनी खांसी को रोकते हुए धीमे स्वर में कहा, 'पंचायत का जो फैसला होगा मुझे भी वही मंजूर होगा।'

इससे पहले कि मामला और अधिक पेचीदा होता दोनों पक्षों के बुजुर्गो, दलित नेताओं और अनुभवी व्यक्तियों ने आपसी मशवरा कर निपटारे का निर्णय ले लिया।

दलित पक्षधर नेताओं में से एक जो चमारों की तरफ से था, उठकर ज्यों ही बोलने लगा, वहां मौजूद सभी लोग बन्द जुबान और आतुर निगाहों से निर्णय की प्रतीक्षा करने लगे।

'हमने अंतिम निर्णय ले लिया है। दोनों बच्चों ने जो शादी की है, उसे सामाजिक, जातीय लिहाज से स्वीकृत नहीं किया जा सकता। ये एक गैरजातीय शादी है जो नहीं मानी जायेगी। बाकी फैसला भाई सुरेंद्र वाल्मीकि जी बताएंगे। उसने हाथ के इशारे से संबोधित किया और बैठ गया।

'जय भीम, जय वाल्मीकि। जैसा कि नेता जी ने बताया कि न तो घरवालों को और न ही समाज को ये रिश्ता मंजूर है। इसलिए पंचायत और समाज ने सर्वसम्मति से ये निर्णय लिया है कि इन दोनों बच्चों रूद्र और अंजलि को जात-बिरादरी से बहिष्कृत किया जाता है। यदि कोई इनसे मिलने की कोशिश करेगा या इनकी सहायता करेगा तो उसका भी बिरादरी से हुक्का पानी बंद कर दिया जाएगा। अगर बच्चे लौटकर आते हैं और अपनी गलती को स्वीकार करते हैं तो पंचायत आप दोनों परिवारों को जल्दी से जल्दी उनकी शादी अपनी बिरादरी में करने का हुकुम भी देती है। हमें लगता है कि आपको इस फैसले पर कोई आपत्ति नहीं होगी।'

नेताजी ने अपनी बात एक साँस में पूरी की और भीड़ को कातर नजरों से देखने लगे। जब कुछ पल तक कोई विरोध की आवाज नहीं उठी तो निर्णय अंतिम हो गया। सभी लोग फैसले से संतुष्ट थे।

लोग, इज्जत का टोकरा उठाकर घूमते लोग। गैरियत बरतते लोग। सजा और सख्ती से सबक देने वाले लोग। जिंदगियों को खत्म करने का फैसला कराने वाले लोग। सामूहिक तौर पर आइंदा ऐसी गलतियां न हों, ये ख्याल कराने वाले लोग। स्वेच्छा से प्रेम संबंधों को इज्जत मिट्टी में मिला देने की उपमा देने वाले लोग। ऐसे बच्चों की तो मार-मारकर खाल उधेड़ देनी चाहिए, जमीन में जिंदा गाड़ देना चाहिए और ऐसी लड़कियों को तो पैदा होने से पहले ही खत्म कर देना चाहिए, ऐसी बातें बुदबुदाने वाले लोग। सब खुश थे। सब लोग। भीड़ अब कानों के पास भिनभिनाती मक्खियों से अधिक कुछ नहीं थी। नेताजी हाथ जोड़कर आंबेडकर

पृष्ठ सं. 75 पर शेष भाग

बलात्कार करने का आदेश दिया जाता है। ऐसा यहां अक्सर ही होता रहता है। फूलन नाम की एक दलित महिला के साथ उच्चवर्ण के पुरुषों ने सामूहिक बलात्कार किया था। मैम ने बताया फूलन ने बाद में उन सारे लोगों को मार डाला था।' डॉक्टर मैम अभी बता ही रही थी कि मैं बीच में ही टोककर बताने लगी, 'नहीं-नहीं! मेरे देश में ऐसा उल्टा खेल नहीं होता है मैम। और भी तो कितने सारे देशों में खुले आम यौन उत्पीड़न का खेल होता है। सभी देशों की ये बात खबर में नहीं आती है। पर खेल के नियम एक ही होते हैं अक्सर। महिला अपने शरीर के साथ लज्जा भी बचाना चाहती है और ये विकृत मानसिकता वाले पुरुष उसके शरीर और शर्म को नग्न करते हैं। तह-रुश ...एक आदिम सामूहिक यौन उत्पीड़न का एक अलंकारिक नाम।

कल सुबह डॉक्टर मैम के आने पर इस बात की चर्चा करनी जरूरी है। अच्छा मेम, इतने देशों में जब ये खेल होता है, तब क्या इस खेल को ओलंपिक क्रीड़ा में विधिवत शामिल किया जा सकता है? अलिम्पिक क्रीड़ा में भी इस खेल का नियम एक ही रखना होगा मैम। सिर्फ किरदारों के स्थान बदल जायेगा इस बार। अत्यावश्यक एक मात्र खिलाडी होगा एक पुरुष।❑

पृष्ठ सं. 58 का शेष भाग

भवन के बाहर चले गए।

लोग अब उठकर खुशी-खुशी अपने घरों की ओर चलने लगे मगर मैं बोझिल मन से वहीं बैठी मन ही मन सोच रही थी। जातीय बहिष्कृत? वो तो हम पांच हजार वर्षों से हैं ही। बस फर्क इतना है कि तब उच्च जातियों ने किया था, अब अपने कहे जाने वाले लोग कर रहे हैं। ये वही दलित समर्थक हैं जो मंचों पर जातिवाद मिटाने की मांग करते हैं, बहुजन एकता की बात करते हैं, शिक्षित होकर संगठित होने की पैरवी करते है, सामाजिक एकता, क्रांति, उच्च जातियों में शादियों की बात करते हैं। अंतर्जातीय विवाह कर जातियों को खत्म करने की बात करते हैं, महिला उत्पीड़न के समर्थक बनतें हैं। कल फिर मंचों पर छदम नारे लगायेगें, आजादी के स्लोगन बोलेंगे, सब रट्टू तोते बन जायेंगे। जी भरकर कोसेगें अन्य जातियों को। जातिवाद, मनुवाद का आरोप लगाते नजर आयेंगे। जातियों के खात्मे की बात करेंगे लेकिन अपने अंदर पनपते जाति के कीड़े को मरने नहीं देंगे। दलित को दलित अस्वीकार करेंगे लेकिन उच्च जातियों से विवाह संबंध बनाने की वकालत करेंगे। लोग! जो आज फैसले को फरमान मानकर खुशी-खुशी लौट रहे हैं, वो फिर यहीं आयेंगे। वो फिर यहीं आयेंगे।

घर जाने की हड़बड़ाहट में लोगों के चलायमान शरीर, हिलते हुए हाथ, एक-दूसरे से भीड़ के टकराते कंधे, ऐसे लग रहे थे जैसे पंचशील और नीले झंडे उठाएं हुए भीम सैनिक, अवसरवादी नेताओं का झुंड, बहकावे, भटकाव, मुखौटिया चेहरे, तमाशबीन भीड़, जो समता और समानता की आवाज उठा रहे हों। आपसी आवाजें जैसे मंचों के छद्म नारे लगाते हमारे लोग। फिर लौटेंगे।

ये यहां फिर लौटेंगे इसी स्थान पर क्योंकि जन्म से पूर्व ही बच्चा जाति की इन अंकुरित कोंपलों को लेकर धरती पर आता है और ये रक्तबीज की भांति अनेक जातियों रूपी शरीर में जन्म लेती ये मनुष्य जाति, जिनकी जड़े बरगद की जड़ों की भांति समाज रूपी मिटटी में नीचे ही नीचे फैलती जाती हैं। इसे मिटा पाना आसान नहीं होगा। मैं निराश होकर अपनी जगह से उठी और थके हुए कदमों से भीड़ के पीछे चल पड़ी। मैंने मुरझाये हुए चेहरे से अपने कमरे में प्रवेश किया। पलंग पर पड़ी आधी खुली किताब 'जाति का समूल विनाश' मेरा मुँह चिड़ा रही थी।❑

डॉ. आंबेडकर कहते हैं

पति और पत्नी के संबंध घनिष्ठ मित्रों की तरह होने चाहिए।

बुद्धि का विकास मानव के अस्तित्व का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए।

भाग्य में विश्वास करने की बजाए अपनी शक्ति और कर्म में विश्वास रखों।

यदि आप संयुक्त एकीकृत आधुनिक भारत चाहते हैं तो सभी धर्मों के शास्त्रों की प्रभुसत्ता का अंत करना होगा।